

बिहार में भाषाओं एवं लिपियों का विकास



सम्पादक : सुभाष शर्मा

बिहार विरासत विकास समिति
बिहार, पटना

2022

प्रकाशक : बिहार विरासत विकास समिति
कला संस्कृति एवं युवा विभाग
बिहार सरकार

मूल्य : ₹ 700

© बिहार विरासत विकास समिति, पटना

वर्ष : 2022

मुद्रक : जे० एम० डी० प्रेस
जकरियापुर, ट्रान्सपोर्ट नगर
पटना-800020

अनुक्रम

	भूमिका		1
अध्याय 1	भाषा—लिपि की विविधता और भारतीय समाज	— डॉ० सुभाष शर्मा	23
अध्याय 2	संस्कृत भाषा का विकास	— डॉ० देवीदत्त शर्मा	61
अध्याय 3	संस्कृत की विकास—सरणि और बिहार	— डॉ० दीप्ति शर्मा त्रिपाठी	95
अध्याय 4	पालि भाषा की उत्पत्ति एवं विकास	— प्रो० अंगराज चौधरी	113
अध्याय 5	बिहार—झारखण्ड की भाषा सादरी	— गिरिधारी राम गौड़ 'गिरिराज'	127
अध्याय 6	मिथिलाक्षर/तिरहुता लिपि की प्राचीनता एवं वर्तमान स्वरूप	— भवनाथ झा	145
अध्याय 7	बांग्ला—बिहार की एक भाषा एवं संस्कृति	— विद्युत पाल	155
अध्याय 8	बिहार में फ़ारसी भाषा और साहित्य का विकास	— डॉ० इमत्याज़ अहमद	171
अध्याय 9	बिहार में उर्दू भाषा की उत्पत्ति और विकास	— डॉ० इमत्याज़ अहमद	185
अध्याय 10	आरम्भिक खड़ी बोली के दो चरण	— डॉ० राजीव रंजन गिरि	205
अध्याय 11	भोजपुरी भाषा : परिदृश्य और विस्तार	— डॉ० सदानन्द शाही	225

अध्याय 12	बिहार में अपभ्रंश का विकास	— डॉ० योगेश प्रताप शेखर	235
अध्याय 13	बोलियाँ, भाषाएँ और परिवर्तन की सम्भावनाएँ : ग्रियर्सन, भाषा —सर्वेक्षण और बिहार	— डॉ० विभा सिंह चौहान	245
अध्याय 14	बिहार में लिपि के बदलते प्रतिमान : ब्राह्मी से नागरी तक	— डॉ० सीताराम दुबे	263
अध्याय 15	जीवन राग की विरासत और विद्यापति के पद	— डॉ० देवशंकर नवीन	285
अध्याय 16	भारतीय भाषाई विविधता : संस्कृत, हिन्दी, ओडिया	— डॉ० देबी प्रसन्न पट्टनायक	301
	रचनाकारों का संक्षिप्त परिचय	—	305

बंदना प्रेयषी, भा.प्र.से.
सचिव
कला, संस्कृति एवं युवा विभाग
बिहार सरकार



बिहार में भाषाओं एवं लिपियों का विकास- एक अवलोकन

भाषा और लिपि मानवीय विकास के लिये अनिवार्य शक्तों में एक है, और इसके बिना सभ्य समाज की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। भारतीय उपमहाद्वीप में लिपि के विकास का प्रथम साक्ष्य लगभग 4500 वर्ष पूर्व सिन्धु घाटी की सभ्यता में मिलता है, परंतु अथक प्रयास के बावजूद इस लिपि को अभी तक पढ़ा नहीं जा सका है, और इसमें अंकित अक्षर हमारे लिये अभी भी पहेली के समान है। सिन्धु घाटी सभ्यता के पतन के लगभग 11-12 सदी के बाद ब्राह्मी के रूप में भारत में पुनः लिपि का विकास हुआ। ब्राह्मी की उत्पत्ति एवं विकास में बिहार का बड़ा योगदान रहा है। यह तो सर्वविदित है कि भारतीय इतिहास में नगरीकरण और राज्य के विकास का दूसरा दौर छठी शताब्दी ईसवी पूर्व में आरंभ हुआ, और मगध महाजनपद इस प्रक्रिया की अग्रणी पंक्ति में खड़ा था। नन्दों और मौर्यों के नेतृत्व में भारतीय उपमहाद्वीप का एक बड़ा भाग मगध साम्राज्य का हिस्सा बना। इस विशाल साम्राज्य का संचालन, सुदूर क्षेत्रों तक फैले व्यापार और वाणिज्य की गतिविधियाँ तथा बौद्ध और जैन जैसे धर्मों का व्यापक प्रचार-प्रसार लिपि के बिना संभव नहीं था। पाटलिपुत्र से निर्गत मौर्यकालीन अभिलेखों- अशोक के पाषाण स्तम्भ, शिलालेख आदि में - सम्राट के उत्कीर्ण संदेश के रूप में हमें ब्राह्मी लिपि के पहले ठोस साक्ष्य प्राप्त हुये हैं। यद्यपि पुरातत्ववेत्ताओं द्वारा यदा-कदा कतिपय साक्ष्यों की खोज हुयी है जिससे यह पता चलता है कि ब्राह्मी लिपि का विकास मौर्य काल के एक-दो सदी पूर्व हुआ होगा।

बिहार में लिपि के क्रमिक विकास के स्पष्ट साक्ष्य प्राचीन काल से लेकर वर्तमान काल तक मिले हैं। अशोककालीन ब्राह्मी, कुषाण ब्राह्मी, गुप्त ब्राह्मी, एवं उत्तर-गुप्त कालीन ब्राह्मी में उत्कीर्ण अभिलेख लिपि के निरंतर होने वाले परिवर्तन को रेखांकित करते हैं। गुप्त ब्राह्मी में तत्कालीन समाज की उत्कृष्ट रचनाएँ लिखी गयी थीं। पूर्व-मध्यकाल में सिद्ध मातृका/नागरी का विकास हुआ जो कालान्तर में

देवनागरी लिपि में विकसित हुई। मध्य काल में भी बिहार में कई लिपियों का प्रसार हुआ। बाह्य सम्पर्क के कारण अरबी और फ़ारसी लिपियों का यहाँ प्रचलन हुआ और इन लिपियों में भी उत्कृष्ट साहित्य की रचना की गयी। इसके अतिरिक्त यहाँ कैथी लिपि का भी विकास हुआ, जिसका उपयोग प्रशासनिक कार्यों यथा न्यायालयों के काम—काज एवं साहित्य रचना में की गई।

बिहार में भाषाओं की विविधता प्राचीन काल से ही देखने को मिलती है। संस्कृत सभ्रांत वर्ग और मनीषियों की भाषा थी। इस भाषा में जहाँ एक ओर कालिदास की कालजयी साहित्यिक रचनाएँ लिखी गयीं तो दूसरी ओर आर्यभट्ट की क्रांतिकारी खगोलशास्त्रीय अवधारणाएँ भी प्रतिपादित की गयीं। नव न्याय जैसे गूढ़ दर्शन के सम्वाहन का माध्यम भी संस्कृत ही बनी। दूसरी ओर प्राकृत साधारण जन के बोलचाल की भाषा के रूप में विकसित हुयी। मगध में पालि मूलतः एक धार्मिक भाषा के रूप में विकसित हुई, एवं इसका प्रयोग बौद्ध धर्म—दर्शन और कर्मकांड के संप्रेषण हेतु किया गया। 8वीं—9वीं शताब्दी के आस—पास संस्कृत और प्राकृत भाषाओं की जगह अपभ्रंश का जोर पकड़ने लगा। अपभ्रंश से ही धीरे—धीरे बिहार की आधुनिक क्षेत्रीय भाषाएँ जैसे—मगही, मैथिली, भोजपुरी, अंगिका और वज्जिका का विकास हुआ। 11वीं—12वीं शताब्दी के सिद्ध साहित्य में इन भाषाओं के शब्द और वाक्य विन्यास देखने को मिलते हैं। बिहार के भू—भाग में कतिपय जन—जातीय भाषाएँ यथा थारू, संथाली आदि भी प्रचलित थीं परंतु थारू भाषा आज लगभग लुप्तप्राय हो गयी है, और इसका विलय भोजपुरी और मैथिली भाषाओं में हो गया है।

बिहार विरासत विकास समिति द्वारा वर्ष 2019 में बिहार में भाषाओं एवं लिपियों का विकास विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें देशभर से प्रतिष्ठित भाषाविदों की प्रतिभागिता रही। संगोष्ठी में बिहार की भाषाओं एवं लिपियों के क्रमिक विकास पर महत्वपूर्ण आलेख पढ़े गये। बाद में इन विद्वानों से लिखित आलेख प्राप्त हुये एवं इनका सम्पादन किया गया। प्रस्तुत पुस्तक बिहार में भाषाओं एवं लिपियों के विकास पर पहला प्रामाणिक कार्य है, और आशा है विद्वानों एवं सुधी पाठकों द्वारा इसे सराहा जायेगा।

पटना

बंदना प्रेयषी

दिनांक : 08 नवम्बर, 2022

डॉ० विजय कुमार चौधरी

कार्यपालक निदेशक

बिहार विरासत विकास समिति



बिहार में भाषा एवं लिपियों का विकास : संकल्पना

प्रस्तुत पुस्तक 'बिहार में भाषा एवं लिपि का विकास' विद्वानों एवं सुधी पाठकों के समक्ष समर्पित करने में मुझे प्रसन्ता का अनुभव हो रहा है। बिहार विरासत विकास समिति, विरासत के मूर्त और अमूर्त दोनों आयामों में कार्य करती है, और यह प्रकाशन अमूर्त विरासत के संरक्षण एवं विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

बिहार विरासत विकास समिति की स्थापना के समय मूर्त विरासत को इसका मूल कार्य-क्षेत्र बनाया गया था। इस उद्देश्य के क्रियान्वयन में विरासत समिति ने कई महत्वपूर्ण पुरातात्विक उत्खनन एवं अन्वेषण प्रोजेक्टों का सफल संचालन किया। बाद में शासी निकाय ने कार्य-क्षेत्र को विस्तारित करते हुये अमूर्त विरासत का समावेश किया। विरासत समिति की मूल प्रवृत्ति शोधपरक है; अतः अमूर्त विरासत के क्षेत्र में यह कार्य-योजना बनाई गई कि इस विषय से संबंधित पहलुओं का प्रथम वैज्ञानिक अभिलेखीकरण एवं प्रकाशन का कार्य कराया जाय। इस दिशा में बिहार की भाषा और लिपि से संबंधित समृद्ध विरासत एवं बिहार की विभिन्न भाषाओं में प्रचलित लोक कथाओं के अभिलेखीकरण का कार्य प्रारंभ किया गया।

प्रस्तुत पुस्तक 'बिहार में लिपियों और भाषाओं के विकास' पर मई, 2019 में आयोजित दो-दिवसीय सेमिनार में प्रस्तुत शोध आलेखों का संपादित रूप है। इस सेमिनार में राज्य और पूरे देश से मूर्धन्य भाषाविदों ने हिस्सा लिया था और उनके द्वारा इस विषय के विविध आयामों पर गहन विमर्श किया गया। लिपियों की बात की जाय तो प्राचीन काल से वर्तमान काल तक के विकास को ब्राह्मी, नागरी, मिथिलाक्षर जैसे लिपियों के अध्ययन से रेखांकित किया गया है। भाषाई

विरासत के विमर्श में जहाँ एक ओर संस्कृत, पाली और फारसी भाषा विषयक आलेख प्रस्तुत किये गये हैं, वहीं दूसरी ओर भोजपुरी, मैथिली, उर्दू, बांग्ला और ओड़िया जैसी भाषाओं पर आलेखों को भी सम्मिलित किया गया है। इस प्रकार यह पुस्तक बिहार की भाषाओं एवं लिपियों के विकास पर एक प्रामाणिक दस्तावेज बन गया है। मैं इस पुस्तक के संपादक डॉ० सुभाष शर्मा और सभी लेखकों के प्रति बिहार विरासत विकास समिति की ओर से कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

पटना

दिनांक : 08 नवम्बर, 2022

विजय कुमार चौधरी